भारत की वैश्विक तरक्की के लिए अपनी भाषाओं को पीछे छोड़ना जरूरी नहीं है

Digital Desk

By दैनिक जागरण On 14 Sep 2026

En

भारत हमेशा से कई भाषाओं, अलग-अलग पहचान और अपनी बात कहने के अलग-अलग तरीकों वाला देश रहा है। हमकामकाज एक भाषा में कर सकते हैं, पढ़ाई दूसरी भाषा में कर सकते हैं और अपने दिल की बातें उस भाषा में कह सकते हैं, जिसे हमने बचपन से सुना और बोला है। इसलिए भाषा सिर्फ बातचीत का जरिया नहीं है। यह अपनापन, पहचान औरजुड़ाव का एहसास भी देती है।

करोड़ों भारतीयों के लिए हिंदी आज भी यही भूमिका निभाती है। आज जब दुनिया तेजी सेडिजिटल और अंग्रेजी-केंद्रित हो रही है, ऐसे में हिंदी की अहमियत अंग्रेजी से मुकाबला करने में नहीं, बल्कि बातचीत कोज्यादा आसान, सहज और तुरंत समझने लायक बनाने में है।

आखिरकार, बातचीत का मकसद सिर्फ जानकारी पहुंचाना नहीं है। कोई संदेश तब ज्यादा मायने रखता है, जब लोगों को उसे समझने या उससे जुड़ने से पहले उसे दूसरी भाषा में बदलने की जरूरत न पड़े।

हिंदी का सफर हमेशा से इस बात से जुड़ा रहा है कि लोग कैसे रहते हैं, बोलते हैं और एक-दूसरे से जुड़ते हैं। सदियों केदौरान हिंदी देश के साथ आगे बढ़ी। आजादी के आंदोलन के दौरान भी हिंदी एक ऐसी भाषा बनी, जिसके जरिए आजादीऔर सामाजिक बदलाव के विचार लोगों तक पहुंचाए गए। 14 सितंबर 1949 को देवनागरी लिपि में हिंदी को भारत सरकारकी राजभाषा के रूप में अपनाया गया—इसी दिन को हर साल हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। सात दशक से ज्यादासमय बाद भी हिंदी की अहमियत सिर्फ इस संवैधानिक पहचान तक सीमित नहीं है।

वेदांता के चेयरमैन अनिल अग्रवाल का हिंदी से जुड़ाव इस भाषा की अहमियत का एक अच्छा उदाहरण है। पटना में पले-बढ़ेअनिल अग्रवाल ने आगे चलकर एक वैश्विक प्राकृतिक संसाधन कारोबार खड़ा किया। वे अक्सर बताते रहे हैं कि वे आजभी हिंदी से इतने करीब से क्यों जुड़े हुए हैं। हिंदी पर अपने एक विचार में उन्होंने कहा था कि जिस भाषा में लोग सोचते हैं, सपने देखते हैं, अपनी आस्था को याद करते हैं और अपनी मां को पुकारते हैं, वह भाषा अक्सर उनके दिल के सबसे करीबहोती है। उनके लिए वह भाषा हिंदी है।

Also Read: फॉर्म सुधारने के लिए बाबर आजम का बड़ा कदम, सात साल बाद फिर खेलेंगे घरेलू फर्स्ट क्लास क्रिकेट

अपने पहले के पोस्ट में उन्होंने बताया था कि

"कुछ शब्द ऐसे हैं जिन्हें हिंदी में बोलते समय जो भाव मेरे मन में आते हैं वो उसके अंग्रेजी अनुवाद में नहीं आ पाते। माँ, बिटिया, जिगरी दोस्त... इन सारे शब्दों के साथ हमारी जो फीलिंग्स जुड़ी हुई है वो इन्हें हिंदी में बोले जाने पर ही महसूस हो पाती है।"

Also Read: किशाऊ परियोजना पर छह राज्यों की बड़ी पहल, अमित शाह की मौजूदगी में हुआ समझौता

उन्होंने यह भी कहा है कि नई भाषाएं सीखना जरूरी है, लेकिन इसके लिए अपनी मातृभाषा को छोड़ना जरूरी नहीं है। उनकी अपनी जिंदगी भी इसी सोच को दर्शाती है। वे कई भाषाएं बोलते हैं, जिनमें अंग्रेजी, भोजपुरी, मैथिली, बंगाली और मारवाड़ी शामिल हैं। फिर भी, उन्होंने हिंदी को वह भाषा बताया है, जिसकी ओर वे बार-बार लौटते हैं—पटना से मुंबई तक और अफ्रीका से लंदन तक।

यह सोच भारत की वैश्विक महत्वाकांक्षाओं को लेकर उनके विचारों में भी दिखाई देती है। अग्रवाल ने इस विचार पर सवालउठाया है कि तरक्की और अपनी भाषा से जुड़ाव एक-दूसरे के खिलाफ हैं। उन्होंने पहले चीन, जापान और जर्मनी जैसे देशोंका उदाहरण देते हुए कहा है कि ये देश अपनी भाषाओं से मजबूत जुड़ाव बनाए रखते हुए भी वैश्विक स्तर पर आगे बढ़े हैं।सोशल मीडिया, इंटरव्यू और सार्वजनिक कार्यक्रमों में हिंदी का लगातार इस्तेमाल इसी सोच को दर्शाता है। उनके लिए भाषासिर्फ व्यक्तिगत पहचान का हिस्सा नहीं है, बल्कि लोगों से आसानी से जुड़ने और उनके करीब बने रहने का एक जरिया भीहै। चाहे वे किसी कार्यक्रम में लोगों को संबोधित कर रहे हों या अपने विचार साझा कर रहे हों, हिंदी के साथ उनकी सहजताएक सरल लेकिन महत्वपूर्ण सोच को दिखाती है: लोगों से उस भाषा में बात की जाए, जो उन्हें अपनी और सहज लगतीहै, तो जुड़ाव ज़ गहरा होता है।

En

अग्रवाल जिस बात को एक भावना के रूप में बताते हैं, वह वास्तव में मापी भी जा सकती है। मनोवैज्ञानिकों ने लंबे समय से "फॉरेन लैंग्वेज इफेक्ट" पर अध्ययन किया है। इसके अनुसार, प्यार या अपनापन जताने वाले शब्दों से लेकर दुख से जुड़े शब्दों तक, भावनात्मक शब्दों को सुनने पर व्यक्ति की पहली भाषा में प्रतिक्रिया ज्यादा मजबूत होती है, जबकि बाद में सीखी गई किसी दूसरी भाषा में यह प्रतिक्रिया अपेक्षाकृत कम होती है। यह अंतर शरीर और भावनाओं से जुड़ी प्रतिक्रियाओं में भी मापा जा सकता है।

उनकी यह पसंद सिर्फ व्यक्तिगत पसंद नहीं है। यह दिखाती है कि वैश्विक स्तर पर कारोबार खड़ा करने के लिए अपनी जड़ोंसे दूर होना जरूरी नहीं है। कोई व्यक्ति दुनियाभर के बाजारों में काम कर सकता है और फिर भी उस भाषा और अनुभवों सेजुड़ा रह सकता है, जिन्होंने उसके शुरुआती सफर को आकार दिया। यह बात खासतौर पर तब महत्वपूर्ण है, जब भारत कीविकास की कहानी बड़े शहरों से आगे बढ़ रही है। देश का आर्थिक भविष्य छोटे शहरों से आने वाले उद्यमियों, नए क्षेत्रों मेंकदम रखने वाले युवाओं और भारत के विकास में सक्रिय भूमिका निभाने वाले समुदायों से भी तय होगा। विकास, तकनीकऔर नई उम्मीदों की भाषा सिर्फ उन लोगों तक सीमित नहीं रह सकती, जो पहले से ही कॉरपोरेट दुनिया और औपचारिकसंस्थानों की भाषा में सहज हैं।

यही वजह है कि हिंदी समेत भारतीय भाषाओं की आज भी उतनी ही अहमियत है।

इसलिए, हिंदी दिवस सिर्फ एक भाषा को मनाने का दिन नहीं है। यह इस बात को समझने का एक मौका है कि किसी देश के विकास में भाषा की कितनी बड़ी भूमिका होती है।

इसलिए, बात वैश्विक स्तर पर आगे बढ़ने और अपनी भाषा से जुड़े रहने में से किसी एक को चुनने की नहीं है। भारत कीताकत इसी में है कि वह दोनों को साथ लेकर चले। और जैसे-जैसे देश विकास के अगले पड़ाव की ओर बढ़ रहा है, हिंदीआज भी एक जरूरी भूमिका निभाती है। यह वह भाषा है, जिसके जरिए करोड़ों लोग आगे बढ़ते भारत को समझ सकते हैं, उसमें हिस्सा ले सकते हैं और उससे जुड़ाव महसूस कर सकते हैं।

और शायद यही अनिल अग्रवाल के सफर से मिलने वाला बड़ा संदेश भी है: भारत दुनिया में जितना आगे बढ़ेगा, उतना ही जरूरी होगा कि वह उन लोगों और भाषाओं से जुड़ा रहे, जिन्होंने उसके सफर को आकार दिया है।

Edited By: दैनिक जागरण

Recommended for You

दैनिक जागरण से जुड़ें:

देश-प्रदेश की ताज़ा ख़बरों को सबसे पहले पढ़ने के लिए हमारे सोशल मीडिया हैंडल को फॉलो करें:

Join Jagran Instagram Channel